मोडा धामन घास से लगभग 100–150 क्विं./है. चारे की पैदावार मिलती है। मोडा धामन घास भेड़ बकरियों के लिए उपयुक्त है।

इन पौधों की राजस्थान के लिए जारी की गई किस्में इस प्रकार है:

धामन– सी ए जेड आर आई – 75, बीकानेरी धामन

मोडा धामन – सी ए जेड आर आई – 76

सेवण – जैसलमेरी सेवण

इन घासों का बीज किसान केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI), जोधपुर से प्राप्त कर सकते हैं। धामन व मोडा धामन का बीज भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, अविकानगर (जिला– टोंक) से भी प्राप्त किया जा सकता है। सेवण बीज कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर से प्राप्त किया जा सकता है।

एक बार लगाये गये चरागाह से काफी वर्षों तक अच्छा चारा प्राप्त होता रहता है। लगभग चार–पांच वर्ष बाद धामन व मोडा धामन घास के चरागाह से कम पैदावार मिलने लगे तो चरागाह में खाली स्थानों पर दुबारा बीज डालें। चरागाह में दलहनी पौधे चरागाह की मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ती है। दलहनी चारे के लिए *क्लीटोरिया टर्नेशिया* पौधों को लगाया जा सकता है।

पश्चिमी राजस्थान में चरागाह स्थापना की उन्नत तकनीक

सुरेन्द्र सिंह शेखावत

सागर मल कुमावत

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (चारा फसलें)

कृषि अनुसंधान केन्द्र (एस.के.आर.ए.यू.), बीकानेर–334 006

पश्चिमी राजस्थान के मरू इलाके में चारा उत्पादन का विशेष महत्व है। इसका कारण यह है कि यह इलाका कृषि से ज्यादा पशु पालन पर निर्भर है। पश्चिमी राजस्थान में मुख्यतया बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर जिले पशुपालन व उसकी चारा व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। इन जिलों में वर्षा कम होती है और उसकी अनिश्चितता भी रहती है। इस क्षेत्र में प्रायः सूखा देखने को मिलता है। अतः वर्षा जल का संरक्षण और सिंचाई के अन्य स्त्रोतों से चारा उत्पादन का अत्यधिक महत्व है। इस इलाके में चरागाह स्थापना का महत्व है ।

मरू क्षेत्र में चरागाह विकास के लिए तीन बहुवर्षीय घासें उपयुक्त है। ये हैं : सेवण, घामन और मोडा घामन। सेवण घास बीकानेर और जैसलमेर जिलों हेतु उपयुक्त है। घामन घास व मोडा घामन सभी जगह उगाई जा सकती है, लेकिन इनकी पानी की आवश्यकता सेवण घास से अधिक होती है।

इनको चरागाह स्थापित करने के लिए इनके बीज या पौधे का जड़ सहित कुछ हिस्सा काम में लिया जा सकता है। वर्षा ऋतु प्रारम्भ होते ही चरागाह विकास करने वाली जमीन को जुताई करके तैयार कर लेते हैं। बीज की मात्रा सेवण घास के लिए 6 कि.ग्रा./ हैक्टेयर व घामन व मोडा घामन के लिए 5 कि.ग्रा./ हैक्टेयर रखी जाती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी सेवण घास में 75 सें.मी. व अन्य दो घासों में 50 सें.मी. रखी जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 50 सें.मी. रखी जाती है। यदि इन घासों की जड़ सहित तने के हिस्से द्वारा चरागाह विकसित किया जाता है तो भी उपरोक्त पंक्ति से पंक्ति व पौधे से पौधे की दूरी रखी जाती है। बीज द्वारा बुवाई करने पर बीज को एक दिन पहले पानी में भिगो देते है और दूसरे दिन भिगाये हुए बीजों को गीली रेत, गोबर व चिकनी मिट्टी में मिला कर गोलियां बना ली जाती है। प्रत्येक गोली में 2–3 बीज रहने चाहिए। गीली रेत, गोबर व चिकनी मिट्टी की बराबर मात्रा लेते हैं। इन गोलियों को सूखा लेते हैं। बुवाई के लिए पंक्तियों में हल चलाकर इन गोलियों को रख देते हैं और ऊपर थोड़ी मिट्टी डाल देते हैं। बीज की गहराई जमीन में 1 सें.मी. से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। रखी हुई गोलियों में बीजों को जमीन में नमी मिलने से उनका अंकुरण हो जाता है। जड़ वाले पौधे के हिस्से लगाने के लिए जड़ की लम्बाई 5–7 सें.मी. कम से कम होनी चाहिए। तने का हिस्सा करीब 20 सें.मी. होना चाहिए। अच्छा चारागाह विकसित करने के लिए जमीन में शुरूआत में 40 कि.ग्रा. नत्रजन व 20 कि.ग्रा. फॉसफोरस प्रति हैक्टर की दर से देना चाहिए। खरपतवार समय समय पर निकालते रहने चाहिए। ये तीनों घास इस प्रकार की हैं कि वर्ष में वर्षा ऋतु के बाद भी इनकी और कटाई ली जा सकती है, लेकिन एक से अधिक कटाई एक वर्ष में तभी संभव होती है जब वर्षा होती है या किसान अपने माध्यम से इनमें सिंचाई करते है। वर्षा के साथ लगातार सिंचाई देकर सेवण घास से एक वर्ष में 3–4 कटाई व धामन व मोडा धामन घास से 5–7 कटाई ली जा सकती हैं। प्रत्येक कटाई से 150–200 क्विं/है. व